UP Board Notes Class 7 Hindi Chapter 16 गुरु तेग बहादुर (महान व्यक्तित्व)

पाठ का सारांश

गुरु तेग बहादुर का जन्म 18 अप्रैल, 1621 को पंजाब के अमृतसर में हुआ था। ये गुरु हरगोबिंद जी के पाँचवें पुत्र थे। सिक्खों के आठवें गुरु हरिकृष्ण जी के निधन के बाद सिक्खों के नवें गुरु बने। इनके बचपन का नाम 'त्यागमल' था। मुगलों के साथ हुए युद्ध में इनकी वीरता देखकर इनके पिता ने इनका नाम तेग बहादुर (तलवार का धनी) रख दिया। मुगलों के साथ युद्ध में हुए भीषण रक्तपात का इनके मन पर गहरा प्रभाव पड़ा और इन्होंने वैराग्य धारण कर लिया। इन्होंने 20 वर्षों तक एकांत में साधना की। इन्होंने आनंदपुर साहिब का निर्माण कराया और वहीं रहने लगे। धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए इन्होंने कई स्थानों का भ्रमण किया। इन्होंने परोपकार के लिए कई कुँओं एवं धर्मशालाओं का निर्माण कराया। गुरु तेग बहादुर ने लोगों का बलपूर्वक धर्म परिवर्तन कराने का विरोध किया जिससे नाराज होकर औरंगजेब ने दिल्ली के चाँदनी चौक पर गुरु तेग बहादुर का शीश काटने का हुक्म दिया। गुरु तेग बहादुर ने हँसते-हँसते अपने प्राणों का बलिदान दे दिया। गुरु तेग बहादुर की याद में उनके शहीदी स्थल पर गुरुद्वारा बना है, जिसका नाम गुरुद्वारा शीशगंज साहिब है। यह दिल्ली के चाँदनी चौक में है। मानवता के हित में उनका यह त्यागमय बलिदान अतुलनीय व अविस्मरणीय है।

https://www.evidyarthi.in/